HINDI
PAPER–III
OCT–10/05

Signature of Invigilators

1. ....

2. ....

Roll No. ☐☐☐☐☐
(In figures as in Admit Card)

Roll. No. ....

....
(in words)

Name of the Areas/Section (if any).................

Time Allowed : 2-1/2 hours] **[Maximum Marks : 200**

Instructions for the Candidates

1. Write your Roll Number in the space provided on the top of this page.
2. Write name of your Elective/Section if any.
3. Answer to short answer/essay type questions are to be written in the space provided below each question or after the questions in test booklet itself. No additional sheets are to be used.
4. Read instructions given inside carefully.
5. Last page is attached at the end of the test booklet for rough work.
6. If you write your name or put any special mark on any part of the test booklet which may disclose in any way your identity, you will render yourself liable to disqualification.
7. Use of calculator or any other Electronics Devices is prohibited.
8. There is no negative marking.
9. You should return the test booklet to the invigilator at the end of the examination and should not carry any paper outside the examination hall.

પરીક્ષાર્થીઓ માટે સૂચનાઓ :

૧. આ પૃષ્ઠના ઉપલા ભાગે આપેલી જગ્યામાં તમારી ક્રમાંક સંખ્યા (રોલ નંબર) લખો.
૨. તમે જે વિકલ્પનો ઉત્તર આપો તેનો સ્પષ્ટ નિર્દેશ કરો.
૩. ટૂંકનોંધ કે નિબંધ પ્રકારના પ્રશ્નોના ઉત્તર દરેક પ્રશ્નની નીચે આપેલી જગ્યામાં જ લખો. વધારાના કોઈ કાગળનો ઉપયોગ કરશો નહીં.
૪. અંદર આપેલી સૂચનાઓ ધ્યાનથી વાંચો.
૫. આ ઉત્તરપોથીમાં અંતે આપેલું પૃષ્ઠ કાચા કામ માટે છે.
૬. આ ઉત્તરપોથીમાં ક્યાંય પણ તમારી ઓળખ કરાવી દે એવી રીતે તમારું નામ કે કોઈ ચોક્કસ નિશાની કરી હશે તો તમને આ પરીક્ષા માટે ગેરલાયક ગણવામાં આવશે.
૭. કેલક્યુલેટર અથવા ઈલેક્ટ્રોનિક્સ સાધનોનો ઉપયોગ કરવો નહીં.
૮. નકારાત્મક ગુણાંક પદ્ધતિ નથી.
૯. પ્રશ્નપત્ર લખાઈ રહે એટલે આ ઉત્તરપોથી તમારા નિરીક્ષકને આપી દેવી. પરીક્ષાખંડની બહાર કોઈ પણ પ્રશ્નપત્ર લઈ જવું નહીં.

FOR OFFICE USE ONLY
MARKS OBTAINED

Question Number	Marks Obtained	Question Number	Marks Obtained
1.		11.	
2.		12.	
3.		13.	
4.		14.	
5.		15.	
6.		16.	
7.		17.	
8.		18.	
9.		19.	
10.			

Total Marks obtained ....

Signature of the co-ordinator ....
(Evaluation)

SEAL

HINDI

PAPER-III

नोट : इस प्रश्नपत्र में **चार (4)** भाग हैं । **सभी** प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

भाग-एक

नोट : **1-6** में से किसी भी **एक** विकल्प के दोनों प्रश्नों के उत्तर लगभग **500** शब्दों में दीजिए । (2×20=40)

ऐच्छिक-एक

1. सूरदास के वाग्वैभव को रेखांकित करते हुए उनके महत्त्व पर प्रकाश डालिए ।

2. तुलसी काव्य में निरूपित रामराज्य की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए ।

अथवा

ऐच्छिक-दो

1. 'राम की शक्तिपूजा' में निराला का अपना संघर्ष भी उभरा है । सोदाहरण बताइए ।

2. महादेवी वर्मा के गीति-तत्व के अनूठेपन पर विचार कीजिए ।

अथवा

ऐच्छिक-तीन

1. 'उपन्यास की निर्मिति यथार्थ के धरातल पर होती है ।' हिंदी उपन्यासों के आधार पर इस कथन की समीक्षा कीजिए ।

2. हिंदी उपन्यासों की बदलती भाषा और शिल्प पर विचार कीजिए ।

अथवा

ऐच्छिक-चार

1. रस सिद्धांत के प्रमुख आचार्यों के मतों का विश्लेषण कीजिए ।

2. 'काव्य की आत्मा' का तात्पर्य समझाइए ।

अथवा

ऐच्छिक-पाँच

1. आचार्य रामचंद्र शुक्ल के आलोचना सिद्धांतों को निरूपित कीजिए ।

2. विजयदेव नारायण साही की आलोचना पद्धति पर विचार कीजिए ।

अथवा

ऐच्छिक-छः

1. रूपवाद क्या है ? हिंदी आलोचना पर उसके प्रभाव को स्पष्ट कीजिए ।

2. विखंडनवाद की अवधारणा को भारतीय संदर्भ में व्याख्यायित कीजिए ।

Q. No. 1. ऐच्छिक ....

Q. No. 2. ऐच्छिक ....

भाग-दो

नोट : **1-6** में से किसी **एक** विकल्प के **सभी** प्रश्नों के उत्तर लगभग **300** शब्दों में दीजिए ।

(3×15=45)

ऐच्छिक-एक

3. " 'पद्मावत' में प्रयुक्त रूपक अंत तक निभ नहीं सका ।" इस कथन पर अपना मत व्यक्त कीजिए ।

4. 'तुलसीदास का पारिवारिक आदर्श आज के युग में भी प्रासंगिक है ।' अपनी असहमति-सहमति को तर्कसहित स्पष्ट कीजिए ।

5. भ्रमरगीत में बुद्धिजनित तर्क पर सहज-तर्क की विजय है । विश्लेषण कीजिए ।

अथवा

ऐच्छिक-दो

3. 'सुमित्रानंदन पंत ने भाषा की लौह-शृंखलाओं को तोड़ा है ।' क्या आप इस बात से सहमत हैं ?

4. 'बादल-राग' प्रकृति-तत्वों में प्रगतिशील चेतना का काव्य है । स्पष्ट कीजिए ।

5. राष्ट्रीय-सामाजिक-सांस्कृतिक चेतना की कविताओं को शक्ति-काव्य किस रूप में कहा जाएगा ?

अथवा

ऐच्छिक-तीन

3. उपन्यास में इतिहास और कल्पना का क्या संबंध होता है ? स्पष्ट कीजिए ।

4. प्रेमचंद ने 'गोदान' में नारीवाद की मशाल किसके हाथ में दी है – मालती, धनिया अथवा मीनाक्षी ? अपना मत लिखिए ।

5. आंचलिक उपन्यास सामान्य ग्रामीण जीवन पर आधारित उपन्यासों से कैसे अलग है ? स्पष्ट कीजिए ।

अथवा

ऐच्छिक-चार

3. औचित्य संप्रदाय का महत्त्व किस बात में है ? स्पष्ट कीजिए ।

4. काव्य-शास्त्र को अलंकार-शास्त्र कहना कहाँ तक उचित है ?

5. वक्रोक्ति तद्विदों को किस प्रकार आह्लादित करती है ?

अथवा

ऐच्छिक-पाँच

3. हजारी प्रसाद द्विवेदी की समीक्षा में भारतीयता का स्वरूप क्या है ? स्पष्ट कीजिए ।

4. नामवरसिंह की नई कविता संबंधी अवधारणा बताइए ।

5. समकालीन आलोचना कृति से संदर्भ की ओर जाती है । स्पष्ट कीजिए ।

अथवा

ऐच्छिक-छः

3. काव्य में सामान्य-जन की भाषा होनी चाहिए -- इससे वर्ड्सवर्थ का क्या मानना था ?

4. फैन्सी किस तरह कल्पना से मिलकर काव्य रचना में मदद करती है ? स्पष्ट कीजिए ।

5. अरस्तू का अनुकरण सिद्धांत प्लेटो की अनुकरण संबंधी मान्यता से कैसे भिन्न है ? स्पष्ट कीजिए ।

Q. No. 3. ऐच्छिक ....

Q. No. 4. ऐच्छिक ....

Q. No. 5. ऐच्छिक ....

भाग-तीन

नोट : प्रत्येक प्रश्न का **पचास** शब्दों में उत्तर दीजिए । **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं । (9×10=90)

6. ट्रेजेडी के संबंध में अरस्तू की मान्यता ।

7. अभिव्यंजना संबंधी क्रोचे की मान्यता ।

8. बिम्ब विधान ।

9. नाट्य-भाषा ।

10. उदात्त की अवधारणा ।

11. आचार्य रामचंद्र शुक्ल की रस-दृष्टि ।

12. फैंटसी की अवधारणा ।

13. आंचलिकता की अवधारणा ।

14. साहित्य में यथार्थ ।

भाग–चार

नोट : निम्नलिखित अवतरण को ध्यानपूर्वक पढ़िये और उस पर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिखिए । प्रत्येक प्रश्न **पाँच** अंकों का है तथा प्रत्येक उत्तर **तीस** शब्दों में होना चाहिए ।

मेरे जीवन का क्या आदर्श है, आपको यह बतला देने का मोह मुझसे नहीं रुक सकता । मैं प्रकृति का पुजारी हूँ और मनुष्य को उसके प्राकृतिक रूप में देखना चाहता हूँ, जो प्रसन्न होकर हँसता है, दुःखी होकर रोता है और क्रोध में आकर मार डालता है । जो दुःख और सुख, दोनों का दमन करते हैं, जो रोने को कमजोरी और हँसने को हलकापन समझते हैं, उनसे मेरा कोई मेल नहीं । जीवन मेरे लिये आनन्दमय क्रीड़ा है, सरल, स्वच्छन्द, जहाँ कुत्सा, ईर्ष्या और जलन के लिये कोई स्थान नहीं है । मैं भूत की चिन्ता नहीं करता, भविष्य की परवाह नहीं करता । मेरे लिये वर्तमान ही सब कुछ है । भविष्य की चिन्ता हमें कायर बना देती है, भूत का भार हमारी कमर तोड़ देता है । हममें जीवन की शक्ति इतनी कम है कि भूत और भविष्य में फैला देने से वह और भी क्षीण हो जाती है । हम व्यर्थ का भार अपने ऊपर लादकर रूढ़ियों और विश्वासों के इतिहास के मलबे के नीचे दबे पड़े हैं; उठने का नाम नहीं लेते, वह सामर्थ्य ही नहीं रही ! जो शक्ति, जो स्फूर्ति मानव-धर्म को पूरा करने में लगनी चाहिए थी, सहयोग में, भाई चारे में, वह पुरानी अदावतों का बदला लेने और बाप-दादों का ऋण चुकाने की भेंट हो जाती है । और जो यह ईश्वर और मोक्ष का चक्कर है, इस पर तो मुझे हँसी आती है । वह मोक्ष और उपासना अहंकार की पराकाष्ठा है, जो हमारी मानवता को नष्ट किए डालती है । जहाँ जीवन है, क्रीड़ा है, चमक है, प्रेम है, वहीं ईश्वर है; और जीवन को सुखी बनाना ही उपासना है, और मोक्ष है । ज्ञानी कहता है, होठों पर मुस्कुराहट न आए, आँखों में आँसू न आएँ । मैं कहता हूँ, अगर तुम हँस नहीं सकते और रो नहीं सकते, तो तुम मनुष्य नहीं हो, पत्थर हो । वह ज्ञान जो मानवता को पीस डाले, ज्ञान नहीं है, कोल्हू है ।

15. मनुष्य को प्राकृतिक रूप में देखने का क्या आशय है ?

16. भूत की चिंता मनुष्य को कमजोर क्यों बनाती है ?

17. 'मानव विरोधी ज्ञान का कोई अर्थ नहीं है ।' स्पष्ट कीजिए ।

18. जीवन आनंदमय क्रीड़ा है – स्पष्ट कीजिए ।

19. रूढ़ियों और विश्वासों को इतिहास का मलबा क्यों कहा गया है ?

ROUGH WORK

SEAL